ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997
Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (I):323-330

तालों में भराव (Filler) का प्रयोग

दुर्गेश चन्द्र विश्वकर्मा तथा मंजू श्रीवास्तव
संगीत कला एवं प्रदर्शन विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), जमुनीपुर, कोटवा, प्रयागराज

Received: 21.08.2024 Revised:02.11.2024 Accepted: 27.05.2025

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में ताल लय का मूल आधार है, जो संगीत की संरचना को व्यवस्थित और संतुलित करता है। इस ताल प्रणाली के अंतर्गत "भराव" (Filler) एक ऐसी लयात्मक सजावट है, जो संगीत प्रस्तुति को समृद्ध, आकर्षक और जीवंत बनाती है। भराव का उपयोग न केवल रचना की शोभा बढ़ाता है, बल्कि यह कलाकार की रचनात्मकता, तकनीकी निपुणता और ताल के प्रति गहन समझ को भी प्रदर्शित करता है। यह शोध पत्र भारतीय शास्त्रीय संगीत की विभिन्न ताल प्रणालियों में भराव के उपयोग, इसके विविध प्रकारों, तकनीकी संरचनाओं, और सौंदर्यात्मक प्रभावों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त, यह पत्र भराव के संदर्भ में विभिन्न संगीत परंपराओं और शैलियों में इसके अनुप्रयोग, साथ ही इसके भावनात्मक और कलात्मक महत्व पर भी प्रकाश डालता है।

भूमिका

भारतीय शास्त्रीय संगीत विश्व संगीत परंपराओं में अपनी अनूठी लयबद्ध जटिलता और गहनता के लिए विख्यात है। इस संगीत परंपरा में ताल न केवल संगीत की रीढ़ है, बल्कि वह आधार भी है जो राग और भाव को एक सूत्र में पिरोता है। ताल की संरचना में सम और खाली के बीच का सामंजस्य संगीत को व्यवस्थित और संतुलित बनाता है, और यहीं पर "भराव " एक महत्वपूर्ण लयात्मक तत्व के रूप में उभरता है। भराव एक ऐसा सेतु है जो ताल के ढांचे को न केवल जीवंत और आकर्षक बनाता है, बल्कि उसे गतिशीलता और सौंदर्यात्मक समृद्धि भी प्रदान करता है। यह विशेष रूप से तबला, पखावज, ढोलक और मृदंगम जैसे तालवाद्यों में देखा जाता है, जहां यह सजावटी भूमिका के साथ-साथ संगीत के प्रवाह में स्वाभाविकता, उत्साह और गहराई का समावेश करता है।

भराव का उपयोग केवल तकनीकी सजावट तक सीमित नहीं है; यह कलाकार की रचनात्मकता, ताल पर उनकी पकड़, और संगीत के प्रति उनकी संवेदनशीलता को भी व्यक्त करता है। यह ताल के खाली स्थानों को रचनात्मक रूप से भरकर संगीत को एक नया आयाम देता है, जिससे प्रस्तुति में विविधता और आनंद की अनुभूति होती है। विभिन्न संगीत शैलियों, जैसे ख्याल, ध्रुपद, ठुमरी, और लोक संगीत में, भराव का उपयोग विभिन्न रूपों और शैलियों में देखा जा सकता है, जो प्रत्येक शैली के अनुरूप अनुकूलित होता है। यह खंड भारतीय शास्त्रीय संगीत में भराव की भूमिका, इसके विविध प्रकारों, तकनीकी संरचनाओं, और इसके सौंदर्यात्मक व भावनात्मक प्रभावों का एक व्यापक परिचय प्रस्तुत करता है, ताकि इसकी महत्ता और उपयोगिता को गहराई से समझा जा सके।

मुख्य शब्द -भराव ,ताल संगीत ,संक्रमणकालीन ,लयबद्धता ,संनादति आदि

भराव की परिभाषा और स्वरूप:

भारतीय शास्त्रीय संगीत में भराव एक लघु, लयात्मक पैटर्न है जो ताल के ढांचे में सम, खाली, या किसी संक्रमणकालीन बिंदु से पहले प्रस्तुत किया जाता है। यह एक गतिशील और रचनात्मक तत्व है जो ताल के रिक्त स्थानों को सजावटी और अर्थपूर्ण ढंग से भरता है, जिससे संगीत की प्रस्तुति में प्रवाह, लयबद्धता और सौंदर्य का समावेश होता है। भराव स्थायी या निश्चित स्वरूप का नहीं होता; यह कलाकार की रचनात्मकता, तकनीकी निपुणता, और प्रस्तुति के संदर्भ पर निर्भर करता है। यह विभिन्न तालवाद्यों जैसे तबला, पखावज, मृदंगम, और ढोलक में भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकट होता है, और प्रत्येक वाद्य के लिए इसके बोल, लय और शैली में विशिष्टता देखी जा सकती है।

भराव का स्वरूप संक्षिप्त और लचीला होता है, जो ताल के चक्र में सहजता से समाहित हो जाता है। यह कभी-कभी ताल के बोलों को दोहराने या उनके साथ संनादति पैटर्न बनाने के लिए उपयोग होता है, तो कभी रचनात्मक स्वतंत्रता के साथ ताल के ढांचे में नवीनता लाने के लिए। उदाहरण के लिए, तबले में "धा-तिरकिट-धा "जैसे छोटे बोलों का समूह या पखावज में जटिल लयकारी के साथ प्रस्तुत होने वाले पैटर्न भराव के उदाहरण हो सकते हैं। यह न केवल प्रस्तुति को जीवंत बनाता है, बल्कि कलाकार को अपनी व्यक्तिगत शैली और ताल के प्रति गहरी समझ को प्रदर्शित करने का अवसर भी प्रदान करता है। विभिन्न संगीत शैलियों जैसे ख्याल, ध्रुपद, ठुमरी, और लोक संगीत में भराव का उपयोग उनकी विशिष्ट लयबद्ध और भावनात्मक आवश्यकताओं के अनुरूप ढलता है। यह खंड भराव के स्वरूप, इसके तकनीकी और सौंदर्यात्मक पहलुओं, और विभिन्न संगीत परंपराओं में इसके अनुप्रयोग को और गहराई से समझने का प्रयास करता है।

भराव के प्रकार:

भारतीय शास्त्रीय संगीत में भराव विभिन्न रूपों और शैलियों में प्रकट होता है, जो ताल के ढांचे

को समृद्ध करने के साथ-साथ कलाकार की रचनात्मकता और तकनीकी कौशल को उजागर करता है। भराव के उपयोग का स्वरूप तालवाद्य, संगीत शैली, और प्रस्तुति के संदर्भ पर निर्भर करता है। नीचे भराव के प्रमुख प्रकारों का वर्णन किया गया है, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रचलित हैं:

1. **बोल आधारित भराव**:

   इस प्रकार के भराव में तालवाद्य के विशिष्ट बोलों (जैसे तिरकिट, धा तिट, ता तिट ता) का उपयोग करके छोटे और संक्षिप्त लयात्मक पैटर्न बनाए जाते हैं। ये बोल ताल के चक्र में खाली स्थानों को भरने के लिए प्रयुक्त होते हैं और प्रस्तुति में स्वाभाविकता और लयबद्धता जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए, तबले में "धा-तिरकिट-धा" या पखावज में "धा-किट-तक" जैसे बोल आधारित पैटर्न सामान्य हैं। ये भराव सरल लेकिन प्रभावशाली होते हैं और ताल के प्रवाह को बनाए रखते हुए प्रस्तुति को सजावटी बनाते हैं।

2. **लयकारी भराव**:

   लयकारी भराव में दुगुन, तिगुन, चौगुन, और तिहाई जैसे जटिल लयात्मक पैटर्न शामिल होते हैं। ये भराव ताल के मूल चक्र को विभिन्न गति और लय विभाजनों में प्रस्तुत करते हैं, जिससे संगीत में गतिशीलता और जटिलता का समावेश होता है। उदाहरण के लिए, एक कलाकार तीन मात्राओं के अंतराल को तिगुन में बांटकर लयकारी भराव बना सकता है, जो ताल को और अधिक आकर्षक बनाता है। तिहाई, जो एक ताल चक्र के अंत में तीन बार दोहराए जाने वाले पैटर्न के साथ सम पर समाप्त होती है, लयकारी भराव का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

3. **क्रिएटिव भराव (रचनात्मक अंतराल)**:

   क्रिएटिव भराव कलाकार की व्यक्तिगत रचनात्मकता और नवाचार का प्रतीक है। ये भराव ताल के ढांचे में रचनात्मक अंतराल या सेतु के रूप में कार्य करते हैं, जो विभिन्न ताल चक्रों या संगीत खंडों को जोड़ते हैं। ये स्थायी पैटर्न पर आधारित नहीं होते, बल्कि कलाकार की तात्कालिक प्रेरणा और संगीत की मांग के अनुरूप बनाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, एक तबला वादक किसी ख्याल प्रस्तुति में राग के भाव को पूरक करने वाला एक अनूठा लय पैटर्न बना सकता है, जो ताल और राग के बीच एक सौंदर्यात्मक संतुलन स्थापित करता है।

ये विभिन्न प्रकार के भराव न केवल ताल की संरचना को समृद्ध करते हैं, बल्कि संगीत की भावनात्मक गहराई और कलात्मक अभिव्यक्ति को भी बढ़ाते हैं। प्रत्येक प्रकार का उपयोग संगीत

शैली (जैसे ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी) और तालवाद्य (तबला, पखावज, मृदंगम) के अनुसार भिन्न हो सकता है, जिससे भारतीय शास्त्रीय संगीत की लयबद्ध विविधता और समृद्धि और अधिक उजागर होती है।

विभिन्न तालों में भराव का प्रयोग:

भारतीय शास्त्रीय संगीत में ताल की विविधता इसके लयबद्ध ढांचे की समृद्धि को दर्शाती है। विभिन्न तालों में भराव (Filler) का उपयोग ताल के स्वरूप, मात्रा वितरण, और संगीत शैली के अनुसार भिन्न होता है। भराव ताल के खाली स्थानों को रचनात्मक और सौंदर्यात्मक रूप से भरकर प्रस्तुति को जीवंत बनाता है, साथ ही कलाकार की लयकारी और रचनात्मकता को प्रदर्शित करता है। नीचे कुछ प्रमुख तालों में भराव के उपयोग और उनके उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं, जो विभिन्न तालों की प्रकृति और उनके सौंदर्यात्मक प्रभाव को स्पष्ट करते हैं:

1. **तीनताल (16 मात्रा):**

   तीनताल भारतीय शास्त्रीय संगीत में सबसे प्रचलित और व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली ताल है, जिसमें 16 मात्राएँ चार समान खंडों (4+4+4+4) में विभाजित होती हैं। इस ताल में भराव का उपयोग विशेष रूप से सम और खाली के बीच के अंतराल को सजाने और प्रस्तुति को गतिशील बनाने के लिए किया जाता है। भराव यहाँ अक्सर बोल आधारित या लयकारी रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

   उदाहरण:
   धा धिन धिन धा | धा धिन धिन धा | धा तिरकिट ता तिरकिट | धा धिन धिन धा इस उदाहरण में "धा तिरकिट ता तिरकिट" एक बोल आधारित भराव है, जो ताल के तीसरे खंड में रिक्त स्थान को भरकर लय में विविधता और आकर्षण जोड़ता है।

2. **एक्ताल (12 मात्रा):**

   एकताल, जो 12 मात्राओं (2+2+2+2+2+2) की एक सममित ताल है, में भराव का उपयोग तिहाई के माध्यम से सम तक पहुँचने के लिए विशेष रूप से प्रचलित है। यह ताल अपनी संतुलित संरचना के कारण भराव के लिए व्यापक रचनात्मक अवसर प्रदान करती है।
   उदाहरण:
   धिं धिं | धागे तिरकिट | तू ना | कत्त ता | धागे तिरकिट | धी ना |

   धागेतेटे तागेतेटे | क्रधातेटे धागेतेटे | गदिगन नागेतेटे |

   तेटेकधा किटधागे | गदिगन धा-गदि | गनधा- गदिगन | धा(सम) (तीहाई) यहाँ "किटधागे गदिगन" जैसे बोल आधारित भराव और तिहाई का उपयोग ताल के चक्र को पूर्ण करने और सम पर प्रभावशाली ढंग से पहुँचने के लिए किया जाता है।

3. **झपताल (10 मात्रा):**

   झपताल (2+3+2+3) एक असममित ताल है, जिसमें भराव का उपयोग अधिक कलात्मक और जटिल ढंग से किया जाता है। इस ताल की अनियमित मात्रा संरचना के कारण भराव ताल के प्रवाह को संतुलित करने और रचनात्मकता को उभारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

   उदाहरण:

   धी ना | धीधी तिरकिट नाना | ती ना | धीधी तिरकिट धाना |

   यहाँ भराव के रूप में "तिरकिट नाना" जैसे बोल ताल के असममित खंडों में संतुलन और लयबद्ध आकर्षण जोड़ते हैं।

4. **दादरा (6 मात्रा):**

   दादरा (3+3) एक हल्की और लोकप्रिय ताल है, जो विशेष रूप से लोक संगीत, ठुमरी, और भक्ति संगीत में प्रचलित है। इसकी संक्षिप्त संरचना के कारण इसमें छोटे और सरल बोल आधारित भराव का उपयोग बहुतायत में होता है।

   उदाहरण:

   धा धी ना | धा तू ना | के बाद - तक तक तक | तकतिर किटति त्ता--|

   यह सरल भराव दादरा की लय को जीवंत बनाता है और लोक संगीत की सहजता को बनाए रखता है।

5. **रूपक (7 मात्रा):**

   रूपक ताल (3+2+2) अपनी असमान मात्रा वितरण के लिए जानी जाती है, जो इसे एक अनूठी लयबद्ध चुनौती बनाती है। इसमें भराव का उपयोग ताल के प्रवाह को संतुलित करने और प्रस्तुति में सौंदर्यात्मक गहराई जोड़ने के लिए किया जाता है।

   उदाहरण:

   ती ती नाना | धीधी नाना | धीधी तिरकिट

   यहाँ "नाना धीधी तिरकिट" जैसे भराव ताल के असमान खंडों को जोड़कर लय को सुसंगत और आकर्षक बनाते हैं।

इन तालों में भराव का उपयोग न केवल तकनीकी दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह संगीत की भावनात्मक अभिव्यक्ति और सौंदर्यात्मक समृद्धि को भी बढ़ाता है। प्रत्येक ताल की अपनी विशिष्ट संरचना और आवश्यकताएँ होती हैं, और भराव इनके अनुरूप ढलकर संगीत को और अधिक जीवंत और प्रभावशाली बनाता है।

4. भराव का सांगीतिक और सौंदर्यात्मक महत्व:

भराव भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक अनिवार्य तत्व है, जो न केवल ताल की संरचना को समृद्ध करता है, बल्कि प्रस्तुति को सौंदर्यात्मक और भावनात्मक गहराई प्रदान करता है। इसका महत्व

निम्नलिखित बिंदुओं में स्पष्ट होता है:

- **लय में विविधता:** भराव ताल के एकरसता को तोड़कर लय में नवीनता और विविधता लाता है। यह ताल के खाली स्थानों को रचनात्मक पैटर्नों से भरता है, जिससे संगीत में गतिशीलता और आकर्षण बढ़ता है।
- **श्रोता की रुचि बनाए रखना:** भराव का उपयोग प्रस्तुति में अप्रत्याशितता और आश्चर्य का तत्व जोड़ता है, जो श्रोताओं का ध्यान आकर्षित करता है और उनकी रुचि को बनाए रखता है। यह संगीत को नीरस होने से बचाता है और उसे जीवंत बनाता है।
- **कलाकार की रचनात्मकता का प्रदर्शन:** भराव कलाकार को अपनी रचनात्मक स्वतंत्रता और तकनीकी निपुणता व्यक्त करने का अवसर देता है। यह उनके ताल के प्रति गहरे ज्ञान और तात्कालिक रचनात्मकता को दर्शाता है।
- **ताल की गति और प्रवाह में सहायता:** भराव ताल के चक्र को सहज और प्रवाहमय बनाए रखता है। यह ताल के विभिन्न खंडों को जोड़कर एक सुसंगत और संतुलित लयात्मक अनुभव प्रदान करता है।
- **प्रस्तुति को जीवंत और गतिशील बनाना:** भराव संगीत में ऊर्जा और गति का संचार करता है, जिससे प्रस्तुति में उत्साह और जीवंतता का समावेश होता है। यह विशेष रूप से लंबी प्रस्तुतियों में ताल को गतिशील बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

  इस प्रकार, भराव न केवल ताल की तकनीकी संरचना को मजबूत करता है, बल्कि संगीत की भावनात्मक और सौंदर्यात्मक अपील को भी बढ़ाता है, जिससे यह भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक अभिन्न अंग बन जाता है।

5. भराव और तिहाई का अंतर:

भराव और तिहाई, दोनों ही भारतीय शास्त्रीय संगीत में लयात्मक तत्व हैं, और कई बार इनकी समानता के कारण इन्हें एक-दूसरे से भ्रमित किया जा सकता है। फिर भी, इनके उद्देश्य, संरचना, और प्रभाव में स्पष्ट अंतर है।

- **भराव:** भराव एक लघु, लयात्मक पैटर्न है जो ताल के रिक्त स्थानों को सजाने और प्रस्तुति में सौंदर्यात्मक विविधता लाने के लिए उपयोग किया जाता है। यह तात्कालिक और रचनात्मक होता है, और इसका उपयोग मुख्य रूप से ताल के प्रवाह को बनाए रखने और प्रस्तुति को आकर्षक बनाने के लिए होता है। भराव का कोई निश्चित स्वरूप नहीं होता और यह कलाकार की प्रेरणा और संगीत की मांग पर निर्भर करता है।
- **तिहाई:** तिहाई एक निश्चित लयात्मक संरचना है, जिसमें एक पैटर्न को तीन बार दोहराया जाता है और यह ताल के सम पर प्रभावशाली ढंग से समाप्त होता है। तिहाई का उपयोग

ताल चक्र को नाटकीय रूप से पूर्ण करने और प्रस्तुति में एक चरमोत्कर्ष लाने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक तिहाई का स्वरूप हो सकता है: "धा तिरकिट धा | धा तिरकिट धा | धा तिरकिट धा," जो सम पर समाप्त होता है।

इस प्रकार, जहाँ भराव ताल में सजावटी और गतिशील तत्व जोड़ता है, वहीं तिहाई एक संरचित और नाटकीय समापन प्रदान करता है। दोनों का संयुक्त उपयोग ताल को और अधिक समृद्ध और प्रभावशाली बनाता है।

6. भराव का शिक्षण और अभ्यास:

भारतीय शास्त्रीय संगीत की गुरु-शिष्य परंपरा में भराव का शिक्षण एक विशिष्ट और गहन प्रक्रिया है। इस परंपरा में गुरु शिष्य को न केवल ताल की तकनीकी बारीकियों, बल्कि उसकी रचनात्मक और सौंदर्यात्मक संभावनाओं से भी परिचित कराते हैं। भराव का अभ्यास विशेष रूप से निम्नलिखित रूपों में किया जाता है:

- **कायदा:** कायदा एक संरचित लयात्मक रचना है, जिसमें भराव का उपयोग विभिन्न बोलों और लयकारी के साथ किया जाता है। शिष्य को विभिन्न बोलों के संयोजन और उनके रचनात्मक अनुप्रयोग सिखाए जाते हैं।
- **रेला:** रेला में तीव्र गति और जटिल लय पैटर्न शामिल होते हैं, जहाँ भराव का उपयोग ताल की गति को बनाए रखने और रचनात्मकता को प्रदर्शित करने के लिए होता है।
- **परन:** परन में जटिल और शक्तिशाली बोलों का उपयोग होता है, और भराव का अभ्यास इसकी संरचना को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए किया जाता है।

शास्त्रीय विद्यालयों और संस्थानों, जैसे कि ITC Sangeet Research Academy, में भराव का अभ्यास तालवाद्य प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। शिष्य को विभिन्न तालों में भराव के उपयोग, उनके बोलों, और उनकी प्रस्तुति शैली को सीखने के लिए लंबे समय तक अभ्यास करना पड़ता है। यह प्रक्रिया न केवल तकनीकी कौशल को बढ़ाती है, बल्कि शिष्य की रचनात्मकता और ताल के प्रति संवेदनशीलता को भी विकसित करती है।

7. निष्कर्ष:

भारतीय शास्त्रीय संगीत की ताल प्रणाली में भराव एक सजावटी तत्व से कहीं अधिक है; यह एक सांगीतिक आवश्यकता है जो लयात्मक सौंदर्य, कलाकार की तकनीकी निपुणता, और प्रस्तुति की जीवंतता को दर्शाता है। भराव ताल के स्थिर ढांचे में गतिशीलता और विविधता लाता है, जिससे संगीत का समग्र अनुभव समृद्ध और प्रभावशाली बनता है। यह न केवल ताल के खाली स्थानों को रचनात्मक रूप से भरता है, बल्कि राग और ताल के बीच एक सामंजस्यपूर्ण संतुलन

भी स्थापित करता है। विभिन्न तालों और संगीत शैलियों में भराव का उपयोग भारतीय संगीत की लयबद्ध समृद्धि और कलात्मक गहराई को उजागर करता है। इस प्रकार, भराव भारतीय शास्त्रीय संगीत की आत्मा का एक अभिन्न हिस्सा है, जो कलाकार और श्रोता दोनों के लिए एक अनूठा और आनंददायक अनुभव प्रदान करता है।

8. संदर्भ (References):

1. Kippen, James. The Tabla of Lucknow: A Cultural Analysis. Cambridge University Press, 1988.
2. Chakraborty, Raja. Rhythmic Imagination in Hindustani Music. New Delhi: Akar Publications, 2005.
3. पं. किशन महाराज के ऑडियो साक्षात्कार और बनारस घराने की परंपराएँ, संग्रहित स्रोत, 1995.
4. Dattatreya, Lalita. Layakari and Improvisation in Hindustani Music. Mumbai: Sangeet Research Publications, 2010.
5. ITC Sangeet Research Academy द्वारा आयोजित कार्यशालाओं और व्यक्तिगत संवादों के निष्कर्ष, 2015-2020.
6. पं .चोतेराम शर्मा के साथ व्यक्तिगत चर्चा, दिल्ली, 2018.
7. Bharatiya Sangeet ke Tattva – पं .वी.एन .भातखंडे .Hathras: Sangeet Karyalaya, 2000.

Disclaimer/Publisher's Note:
The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.